साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50
वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

जून 2013 वर्ष 18, अंक 6

जन्मदिन स्मरण, 6 जून (1890)

लोकप्रिय गोपीनाथ बोरदोलोई

गोपीनाथ बोरदोलोई असम के एक प्रखर और अत्यंत लोकप्रिय राजनेता थे। स्वतंत्रता के संघर्ष में उनका अप्रतिम योगदान था। उन्होंने असम के लोगों को इकट्ठा किया, उनमें प्रेरणा और साहस का संचार किया। पहली बार सन् 1921 में उन्होंने गाँधी जी के नेतृत्व में होने वाले असहयोग आंदोलन में भाग लिया था और इसके कारण अपनी वकालत छोड़ दी। 1938 में वे असम के प्रथम प्रीमियर बनाए गए तथा 1940 में असम के प्रथम सत्याग्रही चुने गए। वे कई बार जेल गए। अपने वृहत्तर सोच के कारण वे असम से बाहर, पूरे देश में लोकप्रिय हुए। इसी से उन्हें 'लोकप्रिय'—इस विशेषण से नवाजा गया।

आजादी के बाद बोरदोलोई जी असम के पहले मुख्यमंत्री बने। उन्होंने ही आधुनिक असम की नींव रखी। राज्य में शिक्षा, कृषि, विज्ञान आदि क्षेत्रों में उन्होंने अभूतपूर्व काम किया। हिंदी भाषा के प्रति उनके मन में अनन्य अनुराग था। वे असम में 'राष्ट्रभाषा प्रसार समिति' के संस्थापकों में एक थे। वे बरसों इस समिति के अध्यक्ष रहे।

असम के महान संत शंकरदेव उनके प्रेरणा स्रोत थे। वे एक अच्छे लेखक व अनुवादक भी थे। वे बाल साहित्य के भी सर्जक थे।

भारत सरकार ने 1999 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

कहीं नहीं बचे हरे वृक्ष
न ठीक सागर बचे हैं न ठीक नदियाँ
पहाड़ उदास हैं और झरने लगभग चुप
आँखों में घिरता है अँधेरा घुप
दिन-दहाड़े यों
जैसे तलघर में बदल गई हो दुनिया
कहीं न बचे ठीक हरे वृक्ष।
—भवानी प्रसाद मिश्र

जन्मदिन स्मरण, 26 जून (1838)

बंकिमचंद्र चटर्जी और वंदेमातरम्

बंकिमचंद्र चटर्जी भारतीय साहित्य के मील के पत्थरों में से एक हैं। उन्हें केवल 'वंदेमातरम्' ने इतनी ख्याति दे दी, जितनी उनकी समस्त कृतियों ने भी नहीं। दरअसल, वंदेमातरम् (रचना काल 1876) उनके प्रसिद्ध राजनीतिक उपन्यास, 'आनंदमठ' में प्रयुक्त एक गीत है, जो भारतीय स्वाधीनता आंदोलन का सर्वाधिक शक्तिशाली और चमत्कारी शब्द बन गया था। यह गीत उन सभी देशभक्तों के लिए प्रेरक और मार्गदर्शक गीत बन गया जो अँग्रेजों को देश से भगा देना चाहते थे। इस गीत में वह धरती माता का आह्वान करते हैं—उस धरती माता का, जो नदियों से सिंचित है, फलों से लदी है और अनाज से शस्य-श्यामला हो रही है। इसमें कुछ हिंदू देवियों का भी आह्वान है।

माना जाता है कि वंदेमातरम् का सर्वप्रथम गान 1886 के काँग्रेस अधिवेशन में रवींद्रनाथ टैगोर ने किया था। श्री अरविंद ने अपने दैनिक अखबार का नाम भी 'वंदेमातरम्' रखा था।

इस गीत में प्रयुक्त दुरूह संस्कृत और बांग्ला शब्दों को लेकर जब उनकी आलोचना हुई, तब उन्होंने कहा था—'मैं शायद इसकी लोकप्रियता देखने के लिए जीवित रहूँ या न रहूँ, पर इतना तय है कि प्रत्येक भारतवासी इसे वेद मंत्र की तरह गाया करेगा।'

स्वाधीन भारत में इस गीत को राष्ट्रगीत का दर्जा दिया गया।

(ज. : 26 जून, 1838 - नि. : 8 अप्रैल, 1894)

संदर्भ : जन्मदिन स्मरण, 11 जून

रामप्रसाद बिस्मिल

सरफरोशी की तमन्ना

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजुए-कातिल में है
रहबरे-राहे-मुहब्बत रह न जाना राह में
लज़्ज़ते-सहरा-नवर्दी दूरिए-मंजिल में है
वक्त आने दे बता देंगे तुझे, ऐ आसमाँ
हम अभी से क्या बताएँ, क्या हमारे दिल में है।
आज फिर मक़तल में कातिल कह रहा है बार-बार
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है
वक्त आने दे बता देंगे तुझे, ऐ आसमाँ
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है।
ऐ शहीदे-मुल्को-मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार
अब तेरी हिम्मत की चर्चा ग़ैर की महफिल में है
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़
एक मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है।

—रामप्रसाद बिस्मिल (1897-1927)

*ने.बु. ट्रस्ट से प्रकाशित पुस्तक **स्वतंत्रता आंदोलन के गीत** से उद्धृत*

किससे करे गुहार, अकेला जंगल है
किससे करे तकरार, अकेला जंगल है
आँखें रोती रहीं, दर्द बोती रहीं
किस पर करे ऐतबार, अकेला जंगल है।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

बूँद-बूँद संचय करके
भू-जल स्तर हमें बढ़ाना है
तैयार करें सब जलस्रोतों को
श्रम की अलख जगाना है।

रूप नारायण काबड़ा, जयपुर, राज.

संदर्भ : विश्व भू-जल दिवस, 10 जून

ताड़पत्र पर पुस्तकें!

बहुत पहले हमारे देश में ताड़पत्रों पर लेखन की परंपरा थी। पर समय के प्रवाह में यह कला लगभग विलुप्त हो गई। किंतु बंगलुरू स्थित सनातन कंपनी ने इस कला को पुनर्जीवित किया है। कंपनी देश के शास्त्रीय ग्रंथों को ताड़पत्र पर तैयार कर रही है। इस विधि से पुस्तकें तैयार करने का यह पहला एवं एकमात्र प्रयास है। कंपनी ताड़पत्र पर गीता, हनुमान चालीसा आदि का लेखन कर इसका देश-विदेश में विक्रय कर रही है। देवनागरी व तमिल समेत अनेक भाषाओं में ताड़पत्र पर पुस्तकें लिखी जा रही हैं।

लघुकथा

चुनाव

वे तीन थे। तीन बूढ़े। तीनों एक गृहिणी के द्वार पर खड़े थे। गृहिणी को बताया कि हम तीनों भूखे हैं, भोजन करना चाहते हैं। गृहिणी ने कहा, "महाराज! आप तीनों भीतर पधारें! मुझे आपको अपने आँगन में बिठाकर भोजन कराने में बड़ी प्रसन्नता होगी।"

तीनों ने इनकार करते हुए कहा, "हम तीनों के बीच एक समझौता है, तीनों में से कोई एक ही किसी घर में जा सकता है।"

"ऐसा क्यों महाराज?" अचंभित गृहिणी ने व्यग्रता से पूछा।

जवाब मिला, "हम तीनों क्रमशः समृद्धि, सफलता और प्रेम हैं। तुम तीनों में से किसी एक को ही अपने घर में बुला सकती हो।"

सुनकर गृहिणी असमंजस में पड़ गई। उसने थोड़ी-सी मोहलत माँगी। दरअसल, वह अपने पति से मशविरा करना चाहती थी। पति-पत्नी ने अच्छी तरह सोच-विचार कर फैसला किया—प्रेम को घर में बुलाया जाए, ताकि उनका घर प्रेम से परिपूर्ण हो जाए।

गृहिणी बाहर आई। उसने बड़ी मनुहार के साथ प्रेम को घर में आने का बुलावा दिया। गृहिणी ने देखा, प्रेम उसके घर की तरफ चला तो दूसरे दोनों बूढ़े भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े। गृहिणी ने उन्हें टोका, "हमने तो प्रेम को घर में बुलाने का फैसला किया है, तुम दोनों क्यों आ रहे हो?"

दोनों ने एक साथ जवाब दिया, "तुम और तुम्हारा पति, दोनों बड़े समझदार हो। तुमने समृद्धि या सफलता को न्योता होता तो शेष दोनों बाहर ही बैठे रहते। लेकिन प्रेम का साथ हम कभी नहीं छोड़ते। वह जहाँ भी जाता है, हम दोनों उसके पीछे-पीछे चल पड़ते हैं।"

साभार : **भगीरथ** *प्रस्तुति :* **मालचंद तिवाड़ी** (सूफी कहावत)

बलिदान दिवस स्मरण, 18 जून (1858)

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

सन् 1857 की प्रथम भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की अप्रतिम नायिका, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का लोहा उनके दुश्मन भी मानते थे। लक्ष्मीबाई के साथ अंतिम युद्ध लड़ने वाले अँगरेज जनरल ह्यूरोज ने उनकी वीरता और साहस की दिल खोलकर तारीफ की। उसने अपनी डायरी में लिखा था : 'नारी होते हुए भी वह विद्रोहियों में एक सर्वश्रेष्ठ और बहादुर सेनानायक थी। विद्रोहियों में एक मात्र वही पौरुष से युक्त एक पुरुष थी।'

संदर्भ : जन्म दिवस, 30 जून (1911)

नागार्जुन

नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें

भीनी-भीनी खुशबूवाले
रंग-बिरंगे
यह जो इतने फूल खिले हैं
कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था
कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था

पकी-सुनहली फसलों से जो
अबकी यह खलिहान भर गया
मेरी रग-रग के शोणित की
बूँदें इसमें मुस्काती हैं

नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है
यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है
मेरी भी आभा है इसमें।

नागार्जुन रचनावली, खंड-1 से साभार

झुलस गई
हरी-भरी धरती
बिन पेड़ों के।
अशोक 'आनन', मक्सी, शाजापुर, म.प्र.

संदर्भ : जयंती, 15 जून **ज. : 1398 - नि. : 1518**

जन-जन की आवाज : कबीर

कबीर की तीन रचनाएँ प्रामाणिक मानी जाती हैं। ये हैं : कबीर ग्रंथावली, बीजक तथा आदि ग्रंथ। सिख धर्म के अनुयायियों के सर्वमान्य ग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में कबीर की कुछ रचनाएँ संग्रहीत हैं।

बीजक कबीरपंथियों का पूज्य और विश्वसनीय ग्रंथ माना जाता है। कबीर ग्रंथावली का संग्रह काल सं. 1561 माना जाता है।

कबीर दास की आज जितनी भी रचनाएँ मिलती हैं वे मुख्यतः तीन रूपों में मिलती हैं–साखी, पद एवं रमैनी। साखी संस्कृत के 'साक्षी' का अपभ्रंश रूप है। रमैनी का सीधा संबंध रामायण से है। कबीर के पद काफी लोकप्रिय हैं। ये आध्यात्मिक भावबोध प्रधानाता लिये हुए हैं।

विचार-बिंदु

एक विद्वान ज्ञान अर्जित करने की लगन में
भोजन भूल जाता है।
ज्ञान प्राप्ति की खुशी में वह अपने गम
भूल जाता है।
उसे यह भी ध्यान नहीं रहता कि बुढ़ापा
पास आ रहा है।

पवन चौधरी, विजडम गुरु

संदर्भ : बालश्रम निषेध दिवस, 12 जून

बालश्रम का उन्मूलन, हर भारतीय का कर्तव्य। आएँ, बालश्रम के विरुद्ध आवाज उठाएँ।

संदर्भ : विश्व रक्तदान दिवस, 14 जून

'रक्तदान महादान'
रक्तदान करने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

संदर्भ : गोवा क्रांति दिवस, 18 जून

पुर्तगाली शासन से मुक्ति हेतु 18 जून, 1946 को डॉ. लोहिया द्वारा शंखनाद किया गया।

संदर्भ : पुण्य तिथि, 30 जून

दादाभाई नौरोजी (1917)
देश इन्हें प्यार से 'ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया' कहता है।

तीन कविताएँ, तीन रंग

एक वृक्ष भी बचा रहे

अनोखीलाल कोठारी

अंतिम समय जब कोई नहीं
जाएगा साथ
एक वृक्ष जाएगा
अपनी गौरैयों-गिलहरियों
से बिछुड़कर
साथ जाएगा एक वृक्ष
अग्नि में प्रवेश करेगा वही मुझसे पहले
कितनी लकड़ी लगेगी?
श्मशान की टाल वाला पूछेगा
गरीब से गरीब भी सात मन तो लेता ही है
लिखता हूँ, अंतिम इच्छाओं में
कि बिजली के दाह घर में हो मेरा संस्कार
ताकि मेरे बाद एक बेटे और बेटी के साथ
एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में।

उदयपुर, राजस्थान

विश्व पर्यावरण दिवस, 5 जून

किताब

साबिर हुसैन

कहती है किताब
अक्षर-अक्षर पढ़ना सीखो
शब्द-शब्द फिर लिखना सीखो
पढ़ो किताब–पढ़ो किताब
किताब तुम्हें बताती है इतिहास
हुई गलतियों का
कराती है अहसास
भविष्य में न हो गलती
समझाती है किताब
सुनहरे भविष्य के सपने
दिखाती है किताब
नित नई प्रगति की
प्रेरणा देती है किताब।

पलिया कलां, हरियाणा

सीखो

ओमप्रकाश शास्त्री

रोना छोड़ो, हँसना सीखो
काम लगन से करना सीखो
सीखो संकट में मुस्काना
अनाचार से लड़ना सीखो
अच्छा पढ़ना, अच्छा लिखना
सुनना-कहना, अच्छा सीखो
सीखो कि हम सब हैं बराबर
सबकी इज्जत करना सीखो
देश हमारा सबसे प्यारा
सिर ऊँचा कर कहना सीखो।

पाड़ला, कैथल, हरियाणा

नेशनल बुक ट्रस्ट के नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत कुछ पुस्तकें : एक परिचय

लालटेन

मधुकर सिंह पृ. 20 ₹ 12.00

वरिष्ठ रचनाकार की जन-जागृति को आंदोलित करती बेहद मर्मस्पर्शी रचना।

ISBN 978-81-237-2775-2

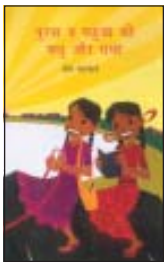

पुरवा व पछुआ की मधु और राधा

रश्मि बड़थ्वाल पृ. 12 ₹ 14.00

पुरवा गाँव की मधु और पछुआ गाँव की राधा ने अपने-अपने गाँव में स्वास्थ्य और साफ-सफाई के संबंध में जागरूकता पैदा कर गाँववालों में चेतना जगाई। ISBN 978-81-237-6263-0

कामकाजी महिलाओं के अधिकार

कमल कुमार पृ. 32 ₹ 9.00

कामकाजी महिलाओं के अधिकारों के बारे में जानकारी देती हुई एक उपयोगी पुस्तक।

ISBN 81-237-3641-X

बरगद का पेड़

जे. भाग्यलक्ष्मी पृ. 20 ₹ 11.00

हमारे वृक्ष उतने ही आदरणीय हैं जितने हमारे घर के बुजुर्ग। एक बेहतरीन रचना।

ISBN 978-81-237-3916-8

बुधिया का सपना

सतीश उपाध्याय पृ. 20 ₹ 12.00

स्त्री के जीवट पर केंद्रित कहानी। कैसे बुधिया पर जुल्म हुआ लेकिन उसने हार नहीं मानी। थाने जाकर शिकायत कर न्याय की हकदार बनी बुधिया। ISBN 978-81-237-4759-0

त से तेनालीराम ब से बीरबल

दिविक रमेश पृ. 24 ₹ 12.00

पुस्तक में तेनालीराम और बीरबल की क्रमशः 'लालच की हार' और 'झपकी', इन दो कहानियों को लिया गया है। तेनालीराम और बीरबल की सूझबूझ की कथा है इसमें।

ISBN 978-81-237-5099-6

दो भाई

निशात फारूक पृ. 16 ₹ 10.00

इस कहानी में अमीर भाई के द्वारा गरीब भाई का शोषण दिल दहला देता है, लेकिन गरीब भाई अंततः बड़े भाई के परिवार की देखभाल करता है।

ISBN 978-81-237-4287-8

कटे पंखों वाली परी

कुलदीप सिंह धीर पृ. 16 ₹ 12.00

युवावस्था में नेत्रहीनता का दंश झेलने वाली एक लड़की के हौसले की कहानी। विपरीत स्थितियों के बावजूद उसे नौकरी मिली और बाद में एक भले-चंगे युवक से शादी भी।

ISBN 978-81-237-5711-7

केसर की महक

बचिंत कौर पृ. 16 ₹ 13.00

अपना बच्चा न होने की स्थिति में एक ग्रामीण दंपति शहर जाकर अनाथालय से एक बच्चा गोद ले लेता है जिससे घर भर में खुशी तैर जाती है। ISBN 978-81-237-5710-0

जन्मदिन

बलदेव सिंह बद्दन पृ. 12 ₹ 11.00

एक वंचित और गरीब बालक हमउम्र धनवान किंतु सहृदय बालक की मदद से पढ़-लिखकर नौकरी प्राप्त कर लेता है। एक मार्मिक कथा।

ISBN 978-81-237-5709-4

हमारे प्राण हमारे हाथ में

इरा गुणसेकरन पृ. 16 ₹ 11.00

अनु. : विजयलक्ष्मी सुंदरराजन

पुस्तक बताती है कि मनुष्य अपनी सुरक्षा को बखूबी निभा सकता है, बशर्ते वह ध्यान दे। स्वास्थ्य केंद्रित एक रचना।

ISBN 978-81-237-3748-5

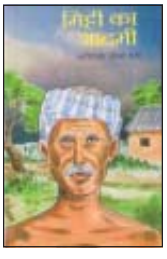

मिट्टी का आदमी

वासिरेड्डी सीता देवी

अनु. : जे. एल. रेड्डी पृ. 32 ₹ 13.00

अपनी गलतियों के कारण वरूथिनी ने अपना घर, परिवार, धन-दौलत, मान-मर्यादा को कैसे खो दिया? बताती है यह रचना।

ISBN 978-81-237-3896-3

अकेलेपन का साथी है किताब
ज्ञान सब देती है हमें किताब
देश-परदेश का साथी है किताब
ऐसा सुख हमें देती है किताब।
प्रकाश भानु महतो, नेंगटासाई, सरायकेला, झारखंड

संदेहों को दूर भगाती
पुस्तक गिनती पाठ पढ़ाती
जोड़, घटाना, गुणा भाग कर
हमें कुशल और दक्ष बनाती।
गोपीनाथ कालभोर, खंडवा, म.प्र.

पुस्तकों की दुनिया
रंग-बिरंगी, प्यारी-प्यारी
उँगली पकड़ दिखाती रास्ता
सुख का, समृद्धि का, आनंद का।
सत्यनारायण भटनागर, रतलाम, म.प्र.

पुस्तकें समय के विशाल सागर में उठे हुए प्रकाश स्तंभ हैं। –ई. पी. व्हिप्पल

पाठकीय प्रतिक्रिया

☐ **सा. सं. : मई 2013 : साक्षरता संवाद** मई अंक में नियमित स्तंभों में संजोई विस्तृत जानकारी के अलावा प्रथम पृष्ठ पर महाप्राण निराला की प्रसिद्ध कविता 'तोड़ती पत्थर' प्रकाशित करके आपने मई दिवस को गरिमामयी स्मृति प्रदान की है। बहुत समय बाद यह कविता पढ़कर निराला जी के प्रति श्रद्धा फिर से उमड़ आई। ऐसी ही एक कविता 'लौटना माँ के पास' भी मदर्स डे को सार्थक करती प्रतीत हुई। आठ पृष्ठों का यह पत्रक सचमुच गागर में सागर है, जिसमें केवल नवसाक्षर ही नहीं सभी वर्गों के पाठक अवगाहन कर सकते हैं।
सुभाष सेतिया, सेक्टर-5, द्वारका, नई दिल्ली

☐ **अप्रैल '13 : सा. सं.** का हर अंक नियमित प्राप्त हो रहा है। पत्रिका सिर्फ नवसाक्षरों के लिए ही नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए उपयोगी है जिसकी पढ़ने-लिखने में रुचि है। हर माह की महत्वपूर्ण तिथियों, विभूतियों की जयंतियों, पुण्य तिथियों पर आप प्रभावी एवं सारगर्भित सामग्री का सचित्र प्रकाशन कर एक तरफ पाठकों का ज्ञानवर्द्धन करते हैं, वहीं इसकी प्रासंगिकता में भी चार चाँद लगा देते हैं। हर पृष्ठ सजा-सँवारकर पठनीय बनाने व बूँद में समुद्र भरने की आपकी संपादन कला सर्वथा सराहनीय है। **भगवती प्रसाद द्विवेदी,** पटना, बिहार

☐ अप्रैल अंक वाकई काफी रोचक व ज्ञानवर्द्धक लगा। विश्व पुस्तक दिवस पर कालजयी प्रस्तुति प्रेरक है। आठ पृष्ठों में एक साथ इतनी सारी सामग्री सहेज ली जाती हैं कि हर अंक संग्रहणीय हो जाता है। **कृष्ण कुमार यादव,** इलाहाबाद, उ.प्र.

☐ मुख पृष्ठ पर छपी श्रीयुत विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की कविता 'पुस्तकें' सर्वथा बेजोड़ है तथा सच्चाई से रू-ब-रू कराती है। छोटी-बड़ी 17 काव्य रचनाएँ, 12-13 ज्ञानवर्द्धक लघु आलेख, लगभग 30 जानकारीपरक चित्र, यानी आठ पृष्ठों में ज्ञान का खजाना परोस दिया है आपने। बहुत-बहुत बधाई और मंगलकामनाएँ! **भगवती प्रसाद गौतम,** कोटा, राजस्थान

☐ क्या बात है! इस छोटी-सी पत्रिका में कितना कुछ दे दिया है। रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं संग्रहणीय है पत्रिका। चित्रों की प्रस्तुति अनूठी है। **डॉ. राकेश अग्रवाल,** हापुड़, उ.प्र.

☐ मुख पृष्ठ पर तिवारी जी कविता एवं अंतिम पृष्ठ पर शरण जी के विचार अच्छे लगे। पृ. 4-5 पर विश्व पुस्तक दिवस पर काव्यमयी प्रस्तुति मनमोहक है। पृ. 7 पर नवसाक्षरों के लिए रचनाएँ बोधगम्य एवं उपयोगी हैं। **आनंद बिल्थरे,** बालाघाट, म.प्र.

☐ पूरा अंक अनेक श्रेष्ठ रचनाओं से सुसज्जित था, अंक मन पर छा गया। मुख पृष्ठ की कविता 'पुस्तकें' (विश्वनाथ प्र. तिवारी) ने आज के जीवन में पुस्तकों की वास्तविक स्थिति को दर्शाकर दिल को दहला दिया। अंतिम पंक्तियाँ जीवन और समय के संदर्भ में पुस्तकों की शाश्वत अस्मिता का बेजोड़ चित्रण हैं। ऐसी रचना के लिए कवि और आप, दोनों को कोटिशः बधाइयाँ! विभूतियों को जयंती एवं पुण्य तिथियों पर स्मरण करने की आपने अच्छी परंपरा शुरू की है। यह अंक अब तक के सभी अंकों से बढ़कर है।
डॉ. मालती शर्मा, पुणे, महाराष्ट्र

☐ **साक्षरता संवाद** हम जैसे स्वेच्छा से लोगों को साक्षर करने और शिक्षा के प्रचार-प्रसार करने वालों के लिए मार्गदर्शक का कार्य कर रही है। लोगों को साक्षर करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति का होना आवश्यक है। **पूर्णिमा मित्रा,** बीकानेर, राजस्थान

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएँ ही भेजें–प्रेरक, उद्‌बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएँ संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएँ कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

अलख

डॉ. अंजना अनिल

हर गाँव
हर ढाणी में
शिक्षा का
अलख जगाओ
शिक्षा ही जीवन है
यह मूलमंत्र बतलाओ
जड़ता है निरक्षरता
अँधियारा है अज्ञान
शिक्षा है
पथ का आलोक
यह शुभ संदेश जगाओ।

अलवर, राजस्थान

गिनती गीत

पूर्णिमा मित्रा

एक-दो, एक-दो
पेड़-पौधों को पानी दो
तीन-चार, तीन-चार
करो पर्यावरण से प्यार
पाँच-छह, पाँच-छह
अन्याय कभी न सह
सात-आठ, सात-आठ
मत दिखा झूठी ठाठ
नौ-दस, नौ-दस
कभी न रो, सदा हँस।

बीकानेर, राजस्थान

सबकी शिक्षा के लिए लड़ेंगी मलाला

पाकिस्तानी किशोरी मलाला युसूफजई ने बच्चों के शिक्षा के अधिकार के लिए लड़ने का अपना संकल्प दोहराया है। हाल ही में अपनी संस्मरण आधारित जीवनी पुस्तक 'आइ एम मलाला' के लिए अनुबंध होने के बाद उन्होंने कहा कि मैं अपनी कहानी बताना चाहती हूँ। यह 6 करोड़ और ऐसे बच्चों की कहानी होगी, जो शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। मैं हर लड़के या लड़की के स्कूल जाने के उसके अधिकार को लेकर अभियान का हिस्सा बनना चाहती हूँ। यह उनका मौलिक अधिकार है। अपनी इस किताब के प्रकाशन के लिए मलाला ने तीस लाख अमेरिकी डॉलर (करीब 16 करोड़ रुपये) का अनुबंध किया है। यह किताब इसी साल प्रकाशित होनी है। तालिबान की गोली की शिकार हुई 15 वर्षीय पाकिस्तानी छात्रा को अब महिलाओं के अधिकारों की एक पैरोकार के रूप में देखा जा रहा है।

(*साभार :* जागरण सखी से)

खड़का एक पत्ता

खड़का एक पत्ता
जाग उठा समूचा दरख़्त
यानी कि
शहर तैयार था अशिक्षा के विरुद्ध
संघर्ष के लिए।

प्रेमकुमार गौतम, झाँसी, उ.प्र.

R. N. I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/6/2013

अभिनव पहल

जंगल बचाती महिलाएँ

झारखंड के गुमला जिला में भरनो प्रखंड के लोंडरा जंगल की सुरक्षा अब महिलाएँ करेंगी। इसके लिए जंगल रक्षा कमेटी बनाई गई है, जिसमें 300 महिलाएँ हैं। इन सभी महिलाओं ने जंगल और जमीन बचाने का संकल्प लिया है। प्रशासन की उदासीनता के मद्देनजर महिलाओं ने कमान अपने हाथ में ली है। इस अभिनव पहल की लीडर सरोज कुमारी हैं, जो वन रक्षा समिति की अध्यक्ष भी हैं। उनका कहना है कि यहाँ पेड़ों की अवैध कटाई के कारण जंगल उजड़ रहे हैं। इसलिए महिलाओं को जंगल बचाने के लिए आगे आना पड़ा है। समिति जंगल से प्राप्त फलों को बेचकर अपनी आर्थिक स्थिति को भी संबल प्रदान करेंगी।

चोरी मत करो, हिंसा मत करो, झूठ मत कहो,
भीख मत माँगो, साधु और ओझाओं के बहकावे में मत आओ,
कोई भी शराब मत पिओ, वह विनाश की जड़ है।
भूत-प्रेत, डायन, पिशाच पर विश्वास मत करो।
चींटियों जैसे परिश्रमी बनो।
पशु-पक्षियों जैसे एक-दूसरे से प्रेम करो
और मिलजुल कर रहो।
हताश मत होओ, मैं तुम्हें डुबाने वाला नहीं हूँ,
मैंने तुम्हें लड़ाई के सब हथियार दिए हैं,
सब सत्य सिखाए हैं।
हम आदिवासी निसर्गतः
इस धरती के नागरिक हैं।
हम स्वतंत्र हैं
और इसलिए स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है,
जिसे हम लेकर रहेंगे।

संदर्भ : बलिदान दिवस, 9 जून (1900)

झारखंड के जननायक **बिरसा मुंडा** का समस्त आदिवासी लोगों को दिया गया प्रसिद्ध संदेश

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070